Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 7, JULY - 2022 Publication Date: 31/07/2022

DOIs:10.2018/SS/202207006 --:-- Research Article

ग्वालियर में महिला उद्यमियों का योगदान और समस्याएं

[1]आरती गौतम [2]डॉ. एम. एल. दीक्षित
[1]पीएचडी रिसर्च स्कॉलर अर्थशास्त्र विभाग जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)
[2]प्रोफेसर इकोनॉमिक्स गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज इंदरगढ़ दतिया (म.प्र.)
[1] Email id : artigautam42020@gmail.com
[2] Email id: drmldixitdatia@gmail.com

सार: हमारे देश भारत में, महिला उद्यमिता अतीत के दौरान एक उपेक्षित क्षेत्र था, लेकिन महिलाओं के बीच शिक्षा और जागरूकता के प्रसार के साथ तस्वीर और विचार बदल गए हैं और महिलाएं आज की सबसे यादगार और प्रेरणादायक उद्यमियों के रूप में उभरी हैं। ऐसा कहा जाता है कि परिवार पहियों वाला एक रथ है जो परिवार के पुरुष और महिला दोनों सदस्यों द्वारा संचालित होता है। यदि पहियों में से कोई एक पीछे चल रहा है, तो रथ यानी परिवार का विकास और विकास नहीं हो पाएगा। उसी तरह जब हम किसी राष्ट्र की बात करते हैं, तो महिला उद्यमिता आर्थिक विकास में प्रमुख भूमिका निभाती है और देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। अगर महिला उद्यमिता की उपेक्षा की जाती है और उत्पादक गतिविधियों की मुख्य धारा में शामिल होने के लिए रोका जाता है तो देश का विकास बहुत धीमा होगा। यह पत्र महिला उद्यमिता के महत्व को उजागर करता है और जिला ग्वालियर में महिला उद्यमियों की समस्याओं और आर्थिक विकास में उनके योगदान पर भी ध्यान केंद्रित करता है।

मुख्य शब्द: योगदान, समस्याएं, उद्यमशीलता गतिविधि, आर्थिक विकास में भूमिका, महिला उद्यमिता।

1. प्रस्तावना :

आधुनिक युग में उद्यमिता का महत्व बढ़ता जा रहा है। यह एक वैश्विक घटना है। विकसित देश पहले से ही उद्यमिता विकास के फल का आनंद ले रहे हैं। इसके विपरीत, भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में, हाल के दिनों में उद्यमिता को महत्व मिला है। विकासशील देशों में इसे स्वरोजगार को बढ़ावा देने का तरीका माना जाता है। लेकिन देश के आर्थिक विकास में सुधार और उसे बनाए रखने के लिए हमें इससे कहीं आगे देखना होगा। भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था को ऐसे उद्यमियों की आवश्यकता है जो दुर्लभ प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करें। सक्षम उद्यमी जो जोखिम उठाएंगे और मौजूदा भौतिक और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने के लिए हर अवसर का उपयोग करेंगे, राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक हैं। उद्यमिता प्राचीन काल से ही पुरुष प्रधान क्षेत्र रहा है। लेकिन आधुनिक समय में स्थिति बदल गई है और महिलाएं सबसे नवोन्मेषी और प्रेरक उद्यमी बन गई हैं। महिला उद्यमिता एक हालिया घटना है जो 1970 में अस्तित्व में आई। लेकिन यह अवधारणा वर्ष 1991 में प्रमुख हो गई, जब नई औद्योगिक नीति अस्तित्व में आई। इस नीति ने वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण को बढ़ावा दिया जिससे पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए अधिकतम स्वरोजगार के अवसर पैदा हुए। महिलाओं की आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने की इच्छा और शिक्षा के प्रसार ने भी उद्यमिता में महिलाओं के प्रवेश को प्रोत्साहित किया। सरकारी योजनाएं और प्रोत्साहन वास्तव में महिला उद्यमियों की बढ़ती संख्या को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। आज आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता बल्कि आर्थिक विकास में उनका योगदान काफी महत्वपूर्ण है। लेकिन अभी भी महिला उद्यमिता के विकास की बहुत गुंजाइश है। स्वरोजगार और उद्यमिता विकास के अवसरों को पुरुष और महिला दोनों उद्यमियों को बिना किसी लिंग भेदभाव के विस्तारित करना होगा। महिला उद्यमियों के महत्व को नजरअंदाज किया जाए तो उद्यमिता के महत्व की चर्चा अधूरी रह जाएगी। महिला उद्यमियों को विकास के नए इंजन या विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के आर्थिक विकास के उभरते सितारे कहा जा सकता है।

2. द्वितीय. अध्ययन का उद्देश्य :

- ग्वालियर में महिला उद्यमियों के योगदान का अध्ययन करना।
- ॥ .द्वितीय. महिला उद्यमियों की सफलता के लिए उत्तरदायी कारकों का अध्ययन करना।
- महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।

3.पद्धति :

अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों के व्यापक सर्वेक्षण पर आधारित है जो प्रकाशित शोध पत्रों, वेबसाइटों, संदर्भ पुस्तकों, पत्रिकाओं और रिपोर्टों आदि से एकत्र किया जाता है।

4. साहित्य की समीक्षा :

उद्यमिता एक आर्थिक गतिविधि है जो किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह द्वारा की जाती है। उद्यमिता को पहले से मौजूद सामग्रियों और बलों के 'नए संयोजन' के निर्माण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है; कि उद्यमिता आविष्कारों के विपरीत नवाचारों के रूप में सामने आती है और कोई भी हमेशा के लिए उद्यमी नहीं होता है, केवल तभी जब वह वास्तव में अभिनव गतिविधि कर रहा हो। (जोसेफ शुम्पीटर)

महिला उद्यमियों पर कमला सिंह के अध्ययन (1992) ने महिला उद्यमियों के प्रोफाइल का निदान करने का प्रयास किया है और प्रमुख उद्यमशीलता लक्षणों, उनकी प्रेरक शक्तियों और प्रदर्शन को मात्रात्मक और साथ ही गुणात्मक रूप से पहचाना है। महिलाओं के उद्यमशीलता विकास को समझने के उद्देश्य से किया गया यह कार्य राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में उनकी मौजूदा स्थिति और योगदान को उजागर करने का एक अनूठा प्रयास है।

तंबुनन, (2009) ने एशियाई विकासशील देशों में महिला उद्यमियों के हालिया विकास पर एक अध्ययन किया। अध्ययन मुख्य रूप से डेटा विश्लेषण और हाल के प्रमुख साहित्य की समीक्षा के आधार पर छोटे और मध्यम उद्यमों में महिला उद्यमियों पर केंद्रित था। इस अध्ययन में पाया गया कि एशियाई विकासशील देशों में एसएमई अत्यधिक महत्व प्राप्त कर रहे हैं; प्रति देश औसतन सभी क्षेत्रों में सभी फर्मों का 95% से अधिक। अध्ययन में इस तथ्य को भी दर्शाया गया है कि शिक्षा के निम्न स्तर, पूंजी की कमी और सांस्कृतिक या धार्मिक बाधाओं जैसे कारकों के कारण इस क्षेत्र में महिला उद्यमियों का प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत कम है। हालांकि, अध्ययन से पता चला है कि एसएमई में ज्यादातर महिला उद्यमी बेहतर पारिवारिक आय की तलाश में मजबूर उद्यमियों की श्रेणी से हैं। .

कलीम (2009) ने बताया कि उद्यमिता आर्थिक चुनौतियों से पार पाने के लिए पूरी दुनिया में एक उत्साहजनक अवधारणा है। महिलाओं में राष्ट्रों के आर्थिक विकास में योगदान करने की अपार क्षमता, योग्यताएं और क्षमताएं हैं। महिला उद्यमिता की संस्कृति को महिला उद्यमिता के लिए अनुकूल कार्यक्रम और नीतियां बनाकर और इसके उचित क्रियान्वयन से युवाओं में बढ़ावा दिया जा सकता है। उद्यमिता विकास में मीडिया उन प्लेटफार्मों को क्रेट और हाइलाइट करके बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है जो समाज में उद्यमशीलता संस्कृति को विकसित करने के लिए दोनों लिंगों की रचनात्मक क्षमता और नवाचार को उत्कृष्ट बना सकते हैं। विकासशील देशों में महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने की तीव्र इच्छा है क्योंकि यह कार्यबल उद्यमों के अनछुए आयामों का पता लगाने के लिए तुरंत उपलब्ध है। महिला उद्यमिता विकसित करने के लिए विकसित देशों को उद्यमिता शिक्षा कार्यक्रम पर प्राथमिक ध्यान देना चाहिए। सभी प्रकार की व्यवसाय और विपणन चुनौतियों को उद्यमिता प्रोत्साहन के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है इसलिए व्यापार जगत उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए युद्धस्तर पर काम कर रहा है।

5. महिला उद्यमी :

एक महिला उद्यमी एक महिला या महिलाओं का समूह है जो व्यक्तिगत लाभ के लिए व्यावसायिक उद्यम शुरू करती है, संगठित करती है और संचालित करती है। महिला उद्यमी की अवधारणा महिला सशक्तिकरण और मुक्ति जैसी अवधारणाओं से संबंधित है। आज हम विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं को पहले के दिनों की तुलना में पाते हैं जहां महिलाओं की गतिविधियां केवल घरेलू काम तक ही सीमित थीं। आज हम महिलाओं को न केवल पापड़, अचार और पाउडर व्यवसाय में बल्कि विनिर्माण, व्यापार और सेवा क्षेत्र में भी पाते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि गति बहुत कम है, लेकिन महिलाएं उद्यमिता के क्षेत्र में प्रवेश कर रही हैं और निश्चित रूप से अपना प्रभाव पैदा कर रही हैं।

6. भारत में महिला उद्यमिता :

भारत में महिला उद्यमिता अभी प्रारंभिक अवस्था में है। भारत में आधिकारिक आंकड़े बताते हैं कि ग्रामीण बेरोजगारों में महिलाएं 60% और कुल बेरोजगारों का 56% हैं (जीईएम, 2002: 11)। परंपरागत रूप से, भारतीय महिलाओं के लिए, विवाह और परिवार प्राथमिक चिंताएं हैं। हालांकि, पिछले एक दशक से महिलाएं अधिक रोजगार/करियर उन्मुख हो गई हैं। इसके कुछ सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। महिला उद्यमी पीटे हुए रास्ते से अलग हो गई हैं और आर्थिक भागीदारी के नए रास्ते तलाश रही हैं। पुल और पुश कारकों ने भारतीय महिलाओं को उद्यमशीलता की दुनिया में प्रवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया। उद्यमशीलता के लिए धक्का कारक जिम्मेदार हैं, जिसमें महिलाएं वित्तीय कठिनाइयों और पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण उद्यम स्थापित करती हैं। पुल कारक काम करते हैं जहां महिलाएं अवसर देखती हैं और छोटे उद्यम शुरू करती हैं जिससे पेशेवर संतुष्टि भी मिल सकती है (जीईएम, 2002: 12)।

चौधरी और अरुंबका (2009) के अनुसार, महिलाओं के लिए एक उद्यमी होने की प्रेरणा भी बदल रही है। महिलाएं स्वतंत्र रहने, रोजगार सृजित करने और इसे एक चुनौती के रूप में लेने के विकल्प के रूप में उद्यमिता की ओर रुख कर रही हैं। महिला उद्यमिता का विकास भी बदलते सामाजिक मूल्यों, शैक्षिक सुविधाओं में वृद्धि और आर्थिक गतिविधियों के बढ़ते मूल्य का परिणाम है।

7. महिला उद्यमियों की समस्याएं :

महिलाओं को दोनों ही मामलों में विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है - किसी भी उद्यमशीलता गतिविधि में प्रवेश करते समय और साथ ही जब वे अपने व्यवसाय को जारी रखते हैं। निःसंदेह पुरुष उद्यमियों को भी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है लेकिन एक महिला होने या नारीत्व ने कुछ चुनौतियाँ पैदा की हैं जिनका सामना महिलाओं को विशेष रूप से करना पड़ता है।

घरेलू और उद्यमशीलता प्रतिबद्धताओं के बीच संघर्ष: एक महिला को मुख्य रूप से घरेलू काम देखना पड़ता है। उसकी उद्यमशीलता गतिविधियों के संचालन के लिए उसके पारिवारिक दायित्व ज्यादातर समय उसके लिए बाधाएँ होते हैं। अपने बच्चों और बूढ़े सदस्यों और परिवार के प्रति उसकी जिम्मेदारियों के परिणामस्वरूप उसके पास किसी भी व्यावसायिक गतिविधि में खुद को संलग्न करने के लिए बहुत कम समय बचा है।

शिक्षा में लैंगिक अंतर: भारत में कई परिवारों में लड़कियों/महिलाओं को विभिन्न कारणों से स्कूलों और कॉलेजों में जाने से रोका जाता है। परिवार के सदस्य स्नातक होने से पहले विभिन्न स्तरों पर अपनी शिक्षा बंद कर देते हैं, इस प्रकार उच्च शिक्षा का सवाल ही नहीं उठता। किसी भी उद्यमशीलता गतिविधि को शुरू करने के लिए आवश्यक शिक्षा, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों और अन्य पाठ्यक्रमों के संयोजन का अभाव है।

गंभीरता से नहीं लिया जा रहा: कोई भी व्यवसाय करने वाली महिलाओं को गंभीरता से नहीं लिया जाता है। उसके आस-पास के लोगों को लगता है कि यह उसका शौक है या उसके पारिवारिक कर्तव्यों का कोई पक्ष है। पुरुषों की राय की तुलना में महिलाओं की राय और सलाह को हमेशा विशेषज्ञ के रूप में नहीं देखा जाता है। (डॉ. विजयकुमार ए. और जयचित्रा एस.) यह लैंगिक पूर्वाग्रह एक महिला उद्यमी के लिए एक बड़ी बाधा बन जाता है।

जोखिम लेने का डर महिलाओं को जोखिम लेने और आगे बढ़ने से ज्यादा डरने वाला माना जाता है। महिलाएं अपने सेफ जोन में ज्यादा सहज होती हैं। उन्हें अपने कंफर्ट जोन से बाहर निकलने में डर लगता है। यह भय असफलता का भय, सफलता का भय, स्वयं के होने का भय हो सकता है।

सबको खुश करना चाहती हैं : महिलाओं को बचपन से ही सबके साथ अच्छा व्यवहार करना सिखाया जाता है। उन्हें 'हमेशा और सभी को खुश करना' कहना सिखाया जाता है और इस वजह से कई बार महिला को हल्के में लिया जाता है। वे किसी को भी ना कहना मुश्किल महसूस करते हैं, जो उनकी ज़रूरतों, व्यवसाय या अन्यथा की कीमत पर हो सकता है।

सभी कार्यों में परिपूर्ण होना चाहती हैं: महिलाएं सभी कार्यों में हमेशा परिपूर्ण रहना चाहती हैं, चाहे वह उनके निजी जीवन में हो या उनके पेशेवर जीवन में। उन्हें लगता है कि वे सबसे अच्छे हैं जो उनके सामने किसी भी काम को बखूबी अंजाम दे सकते हैं। यह उन्हें प्राधिकरण के प्रतिनिधिमंडल में गरीब बनाता है जो उनके व्यवसाय में उनकी सफलता के लिए एक बाधा हो सकती है।

पितृसत्तात्मक समाज : इस पुरुष प्रधान समाज में आज भी जब महिलाएं अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्रों में काम करती हैं, तब भी महिलाओं के साथ समान व्यवहार नहीं किया जाता है। हमारा एक पितृसत्तात्मक समाज है जो पुरुष अहंकार और सनक को लाड़ प्यार करता है। इस परिदृश्य में, उद्यमशीलता की गतिविधि करने वाली एक महिला एक दूर का सपना है। महिलाओं के सामने आने वाली अन्य चुनौतियाँ वे हैं जो पुरुषों और महिला उद्यमियों दोनों के लिए समान हैं। वित्त की कमी, विपणन समस्या, कच्चे माल की कमी, कड़ी प्रतिस्पर्धा, उत्पादन की उच्च लागत, सीमित प्रबंधकीय क्षमता, उद्यमिता प्रशिक्षण की कमी आदि महिला उद्यमियों के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियाँ हैं।

8. महिला उद्यमियों का योगदान :

देश के आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। वास्तव में उन्हें किसी भी व्यावसायिक गतिविधि में सक्रिय भाग लेने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करना होता है। अनौपचारिक अर्थव्यवस्था और भारत में सूक्ष्म और लघु उद्यम क्षेत्र में भी महिलाओं का बड़ा हिस्सा है। आर्थिक विकास के त्वरण के लिए महिला उद्यमियों की आपूर्ति में वृद्धि की आवश्यकता है (शाह, 2012)। महिला उद्यमी परिवार और समाज दोनों में परिवर्तन लाने वालों की भूमिका निभाती हैं और समाज के अन्य सदस्यों को इस तरह की गतिविधियों को करने के लिए प्रेरित करती हैं। महिला उद्यमी राष्ट्र की संपत्ति हैं क्योंकि वे कुछ उत्पादक गतिविधियों में लगी हुई हैं और दूसरों के लिए रोजगार के अवसर भी पैदा करती हैं। इससे गरीबी में कमी आती है और बेरोजगारी की समस्या कम होती है। महिला उद्यमी जिला ग्वालियर के आर्थिक विकास के लिए विभिन्न विशेषताओं का योगदान करती हैं।

पूंजी निर्माण: एक अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ती है यदि निष्क्रिय बचत को कुछ उत्पादक गतिविधियों में निवेश किया जाता है। बेकार पड़े धन को उद्योग में जुटाया और निवेश किया जाता है और इस प्रकार राष्ट्रीय संसाधनों का इष्टतम उपयोग किया जाता है। पूंजी निर्माण की यह घटना आर्थिक विकास को गति देती है।

प्रति व्यक्ति आय में सुधार: भूमि, श्रम और पूंजी जैसे बेकार संसाधनों को वस्तुओं और सेवाओं के रूप में राष्ट्रीय आय और धन में परिवर्तित करने के अवसरों का दोहन उद्यमशीलता की गतिविधियों में वृद्धि का परिणाम है। परिणामस्वरूप प्रति व्यक्ति आय और शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि होगी।

रोजगार का सृजन: उद्यमशीलता की गतिविधियाँ रोजगार के अवसरों को जन्म देती हैं। महिला उद्यमी नौकरी तलाशने वाली नहीं बल्कि नौकरी देने वाली बनती हैं। स्वाभाविक रूप से रोजगार पैदा करने से आर्थिक विकास में तेजी आएगी।

संतुलित क्षेत्रीय विकास: राष्ट्र का क्षेत्रीय विकास संतुलित है क्योंकि महिलाएं ज्यादातर ग्रामीण और अविकसित क्षेत्रों में अपनी व्यावसायिक गतिविधियाँ शुरू करती हैं। सरकार उद्यमियों को विभिन्न योजनाओं और सब्सिडी के माध्यम से इन क्षेत्रों में व्यवसाय शुरू करने के लिए भी प्रोत्साहित करती है।

जीवन स्तर में सुधार: महिलाओं द्वारा अपने छोटे पैमाने के व्यवसायों में विभिन्न उत्पादों का उत्पादन किया जाता है, जो लोगों को उचित दरों पर पेश किए जाते हैं। नए उत्पादों को पेश किया जाता है और आवश्यक वस्तुओं की कमी को दूर किया जाता है। इससे जीवन स्तर में सुधार लाने में मदद मिलती है।

नवाचार: नवाचार उद्यमिता की कुंजी है। (डॉ जी माल्याद्री) एक उद्यमी अपने नवाचारों के माध्यम से नया उद्यम शुरू करता है और इस प्रकार अग्रणी और उद्योग के नेता की महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जैसा कि हमने ऊपर देखा, उद्यम विभिन्न कोणों के माध्यम से आर्थिक विकास में तेजी लाता है। महिला उद्यमी व्यवसाय विकास में योगदान देने के अलावा परिवारों और समाज को बदल रही हैं। महिलाओं के शिक्षा, अपने परिवार और अपने समुदाय में अपने मुनाफे का पुनर्निवेश करने की अधिक संभावना है।

इन सभी योगदानों के बावजूद आज हम पाते हैं कि महिला उद्यमियों की दर बहुत कम है। सरकारी और गैर-सरकारी एजेंसियों ने भी उनके योगदान को मान्यता दी है और महिला उद्यमियों के सशक्तिकरण की ओर अधिक ध्यान दिया है। यद्यपि महिलाएं कम गति से उद्यम के क्षेत्र में प्रवेश कर रही हैं, हम देखते हैं कि विभिन्न महिलाएं घरेलू बाजारों और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में

भी सफलतापूर्वक अपना कारोबार चला रही हैं। किरण मुजुमदार शॉ, शाहनवाज हुसैन, एकता कपूर, ज्योति नाइक (लिज्जत पापड़), रजनी बेक्टर (क्रेमिका) आदि... यह बहुत लंबी सूची है। लेकिन फिर भी हम पाते हैं कि उद्यमशीलता की गतिविधियों में महिलाओं के प्रवेश की दर बहुत कम है। और उपरोक्त पैराग्राफ में हमने महिला उद्यमियों के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों को देखा है।

9. निष्कर्ष :

विषय से पता चलता है कि आर्थिक विकास, गरीबी में कमी और महिला उद्यमिता के बीच सीधा संबंध है। हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सही कहा है कि जब महिलाएं आगे बढ़ती हैं तो परिवार चलता है, गांव चलता है और राष्ट्र चलता है।

उपरोक्त चर्चा से पता चलता है कि हालांकि महिला उद्यमियों को हाल ही में मान्यता मिल रही है, फिर भी उन्हें अभी एक लंबा रास्ता तय करना है। गृहिणी से महिला उद्यमी में परिवर्तन इतना आसान नहीं है और उसी तरह एक महिला के लिए अपने व्यवसाय में सफल और टिके रहना भी मुश्किल है। उसे अपने अनुभवों से सीखना होगा, खुद को ढालना होगा और अपने क्षेत्र की चुनौतियों से पार पाना होगा। उसे खतरों को दूर करने के लिए अपनी शक्तियों का रचनात्मक उपयोग करना होगा और अपनी कमजोरियों को कम करने के लिए सभी अवसरों का लाभ उठाना होगा। यह निश्चित रूप से उसके लिए अपने व्यवसाय को सफल बनाने और विकसित करने का एक मंत्र होगा।

सन्दर्भसूची:

[1]. अरकेरी शांता वी।, भारत में महिला उद्यमिता, कला और शिक्षा में अनुसंधान के अभिनव जर्नल।
[2] डॉ जी माल्याद्री; भारत के आर्थिक विकास में महिला उद्यमियों की भूमिका; इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च वॉल्यूम। 3; आईएसएसएन 2250-1991
[3] लक्ष्मी, सी.एस. (एड) भारत में महिला उद्यमिता का विकास। डिस्कवर पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
[4] मलाथी वी गोपाल, महिला उद्यमियों की भूमिका संघर्ष, भारतीय प्रबंधन संस्थान एनआईएसआईईटी, भारत सरकार, हैदराबाद, 2005, पी। 54.
[5] मीनू गोयल, जय प्रकाश, भारत में महिला उद्यमिता-समस्याएं और संभावनाएं, आईजेएमआर, खंड 1, आईएसएसएन 22315780
[6] सुमंगला नाइक, महिला उद्यमियों के विकास की आवश्यकता, योजना, वॉल्यूम। 47(7), जुलाई 2003, .37.
[7] टी. विजयकुमार, बी. नरेश, भारत में महिला उद्यमिता- लघु और मध्यम उद्यम में महिलाओं की भूमिका, टीएजेएमएमआर, वॉल्यूम। 2, आईएसएसएन 2279-0667